पुस्तक समीक्षा

पुस्तक नाम- रामानन्द द्वादश शिष्यों की प्रामाणिकता (सन्त पीपाजी विशेष), **लेखक-** डा. बंशीलाल, **संस्करण-** प्रथम, **वर्ष-** 2021ई., **ISBN**– 978-93-90179-34-3, **मूल्य**– 350 रु., **पृष्ठ संख्या**– 252, **प्रकाशक-** राजस्थनी ग्रन्थागार, प्रथम मंजिल, गणेश मन्दिर के सामने, सोजती गेट, जोधपुर-342001.

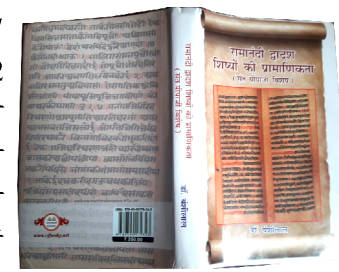

आलोच्य पुस्तक जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध प्रबन्ध के आधार पर संशोधित एवं पल्लवित कर पुस्तकाकार प्रकाशित की गयी है। इसमें कुल 7 अध्याय हैं, जिनमें स्वामी रामानन्द एवं उनके द्वादश शिष्यों के सम्बन्ध में मात्र 2 अध्यायों में द्वितीयक स्रोतों के आधार पर सूचनाएँ दी गयी है, किन्तु तीसरे अध्याय से सन्त पीपाजी पर केन्द्रित सामग्री है। ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालयीय शोध की कतिपय बाध्यताओं के कारण "रामानन्द द्वादश शिष्यों की प्रामाणिकता" यह अंश नामकरण के साथ जोड़ना पड़ा है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण ग्रन्थ सन्त पीपाजी के जीवन एवं साहित्य पर केन्द्रित है।

लेखक ने पीपाजी के सम्बन्ध में पूर्ववर्ती इतिहासकारों के द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्तों का संकलन किया है, जो पर्याप्त नहीं है। यदि हम पीपाजी का जन्म 1323 ई. मानते हैं तो कतिपय ऐतिहासिक विसंगतियाँ जन्म लेंगी। जैसे- उनके गुरु रामानन्द का कालनिर्णय प्रभावित होगा, फिर इसके कारण कबीर का कालनिर्णय प्रभावित होगा और आगे की शिष्य परम्परा के काल में अंतर आ जायेंगे। अतः इतिहास सम्बन्धी गणनाओं में पुनर्विचार की आवश्यकता है। हमें आगे की ज्ञात परम्परा के आधार पर रामानन्द एवं उनके द्वादश शिष्यों के इतिहास पर पुनर्विचार करना होगा।

इसके अतिरिक्त सन्त पीपाजी के सम्बन्ध में अन्य सभी विवेचन महत्त्वपूर्ण हैं। चूँकि लेखक उसी क्षेत्र की संस्कृति में पले-बढ़े हैं तो निश्चित रूप से पीपाजी की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा से परिचित हैं। तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि वे विश्वविद्यालयीय शोध-शैली की बाध्यता से बँधे हुए हैं। फिर भी, पीपाजी पर अभीतक किये गये सम्पूर्ण कार्यों का सन्दर्भ यहाँ पर पाठक को मिल जाता है, जो आगे अग्रतर शोध के लिए उपयोगी हैं। डा. पूरन सहगल द्वारा किया गया शोध "सन्त पीपाजी एवं भक्ति आन्दोलन" का यहाँ भरपूर उपयोग हुआ है। इसी प्रकार ललित शर्मा कृत "राजर्षि सन्त पीपाजी" ब्रजमोहन टाक कृत "सन्त शिरोमणि पीपा : जीवन दर्शन" आदि अद्यतन किये गये कार्यों का यहाँ समायोजन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों पर आधारित इस पुस्तक का महत्त्व इस बात को लेकर है कि पाठक जब पहली बार पीपाजी को पढ़ने लगे, तो उसे एक ही पुस्तक में सब कुछ मिल जाये। लेखक ने परिश्रम कर इन स्रोतों का संकलन किया है। साथ ही, लेखक ने पीपाजी के पदों की खोज में अनेक प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानों के ग्रन्थ भंडारों को देखा है और अपनी समीक्षा दी है। इसके कारण एक और अद्यतन किए गये कार्यों की पुष्टि भी कर दी है, जो महत्तवपूर्ण है।

रामानन्द स्वामी के अन्य सभी शिष्यों पर भी इस प्रकार के ग्रन्थ की आवश्यकता है, जिनमें से रविदास, कबीर आदि पर तो बहुत कार्य हो चुके हैं, पर सेन नाई, सधन, आदि अज्ञात अल्प-ज्ञात सन्तों पर भी इस प्रकार के कार्य के लिए प्रेरणा मिलती है। कुल मिलाकर सामान्य पाठकों के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है तथा सन्त पीपाजी के सम्बन्ध में ज्ञानप्रद है। लेखक के परिश्रम को साधुवाद देता हूँ।

- भवनाथ झा